अध्याय - 8

निष्कर्ष

निष्कर्ष

शौका एक जनजातीय समुदाय है जो पश्चिमी नेपाल की व्यास घाटी में स्थिति अपने पैतृक ग्रामों 'छांगरू' एवं 'तिंकर' एवं दार्चुला जिला मुख्यालय के समीपस्थ बने अपने शीतकालीन आवासों में निरन्तर प्रवर्जन करती है। वर्ष में 6 माह (मई से नवम्बर) अपने पैतृक आवासों एवं 6 माह (दिसम्बर से अप्रैल) अपने शीतकालीन आवासों में निवास करने वाली इस व्यापारिक समुदाय की कुल जनसंख्या 746 है जो 'व्यास गांव विकास समिति' के दो ग्रामों 'छांगरू एवं तिंकर' के 123 परिवारों विभक्त है।

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्‌देश्य शौका जनजाति का सामाजिक मानवशास्त्रीय अध्ययन करना है जिसके अन्तर्गत शौका समाज, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था का विस्तृत अध्ययन किया गया है। अध्ययन की सुविधा हेतु प्रस्तुत शोध में उद्‌देश्यों का निरूपण इस प्रकार किया गया है।

अध्ययन के उद्‌देश्य :

1. पश्चिमी नेपाल की व्यास घाटी में आवासित शौका समुदाय की आवासीय दशाओं का अध्ययन।
2. पश्चिमी नेपाल की व्यास घाटी में आवासित शौका समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक संगठन के विभिन्न स्वरूपों का अध्ययन।
3. पश्चिमी नेपाल की व्यास घाटी में आवासित शौका समुदाय की आर्थिक संरचना का अध्ययन।
4. शौका समुदाय के विशेष संदर्भ में नेपाल और तिब्बत के बीच अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की विद्यमान दशाओं एवं संभावनाओं का अध्ययन।

आवासीय दशाएँ :

शौका पश्चिमी नेपाल की दार्चुला जिले की व्यास घाटी में आवासित एक जनजातीय समुदाय है। दार्चुला हिमालय की उच्च पर्वत श्रंखलाओं में भारत एवं तिब्बत सीमा में अवस्थित एक सुदूरवर्ती जिला है। पश्चिमी नेपाल के महाकाली अञ्चल का सुदूरवर्ती यह जिला भौगोलिक दृष्टि से 80^0 22'' से 81^0 9'' पूर्वी देशान्तर एवं 29^0 36'' से 30^0 15'' उत्तरी अक्षांश में स्थित है। इसकी ऊँचाई 518 मीटर से 7132 मीटर तक है। दार्चुला जिला के पूर्व में बझांग, पश्चिम में भारतीय सीमा का पिथौरागढ़ जिला, उत्तर में तिब्बत (चीन), दक्षिण में नेपाल राष्ट्र का बैतड़ी जनपद इसकी भौगोलिक सीमाओं का निर्धारण करते हैं। दार्चुला जिला का कुल क्षेत्रफल 3229 वर्ग कि0मी0 है। यहां की कुल जनसंख्या 101614 है। जिसमें 50167(49.37%) पुरुष एवं 51447 (50.63%) महिलायें हैं। कुल परिवारों की संख्या 17625 है जिसमें 15835(89.84%) परिवार कृषि, 337(01.9%) परिवार व्यापार, 128(0.74%) परिवार उद्योग, 648(3.88%) परिवार सामुदायिक सेवा एवं 641(3.64%) परिवार अन्य कार्यों में संलग्न हैं।

दार्चुला जिला के अन्तर्गत आने वाली 41 गांव विकास समितियों में से एक 'व्यास गांव विकास समिति' जिसे व्यास घाटी में होने के फलस्वरूप यह नाम दिया गया है, शौकाओं का निवास स्थान है। ''व्यास गांव विकास समिति'' भौगोलिक दृष्टि से 23.92 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली है। जहां 'छांगरू एवं तिंकर' ग्राम स्थित हैं। दार्चुला जिला मुख्यालय से 70 कि0मी0 की दूरी पर 10500 फीट के ऊँचाई पर छांगरू एवं 81 कि0मी0 की दूरी पर 12000 फीट की ऊँचाई पर तिंकर ग्राम स्थित है। ये दोनों ग्राम ही 'व्यास गांव विकास समिति' में शौकाओं के निवास स्थान हैं। शौका जनजाति की कुल 746 जनसंख्या 123 परिवारों में निवास करती है जिसमें 387(51.8%) पुरुष एवं 359(48.2%) महिलायें हैं। शौका एक प्रवर्जनकारी जनजाति होने के फलस्वरूप

दो–दो आवासों में निवास करती है। इनके पैतृक ग्राम छांगरू एवं तिंकर ही इनके ग्रीष्मकालीन आवास हैं। जहाँ ये अप्रैल से नवम्बर माह तक निवास करते हैं। नवम्बर माह के अन्त में जब इनके पैतृक ग्रामों में हिमपात होने लगता है तब ये नदी घाटियों में बने अपने शीतकालीन आवासों जो कि दार्चुला जिला मुख्यालय के समीप 'बंगाबगड़' एवं 'मोती' नामक स्थान पर बने हैं, में आ बसते हैं।

इनके पैतृक आवास मिट्‌टी, लकड़ी एवं पत्थर से बने हैं जिनकी खिड़की एवं दरवाजों पर सुन्दर नक्काशियाँ दिखती हैं। यह नक्काशियाँ शौका आवासों की सुन्दरता को बढ़ाती हैं। शौका आवास सामान्यतः तीन मंजिले होते हैं। अध्ययन के दौरान शोधकर्ता ने पाया कि यहां वर्तमान में भवन निर्माण में मिट्‌टी के स्थान पर सीमेन्ट का प्रयोग भी होने लगा है। फलस्वरूप यहां कच्चे एवं पक्के दोनों प्रकार के आवास दिखाई पड़ते हैं। कच्चे आवासों से तात्पर्य है लकड़ी, मिट्‌टी एवं पत्थरों से बने पारम्परिक आवास जबकि पक्के आवासों को सीमेन्ट, लकड़ी एक पत्थरों से निर्मित आवासों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यहां 19 (15.5%) पक्के आवास एवं 104 (84.5%) कच्चे आवास हैं। जिनमें न्यूनतम 2 से अधिकतम 12 कमरे तक पाये जाते हैं। शौका शीतकालीन आवासों का पारम्परिक स्वरूप वही है परन्तु वर्तमान में यहाँ सीमेन्ट, सरिया एवं सीमेन्ट से बनी ईंटें (ब्लाक) भवन निर्माण में प्रचलन में आयी हैं। यहां आवासों का निश्चित आकार नहीं है। यहां 94(76.2%) पक्के आवास एवं 29(23.8%) कच्चे आवास हैं जिनमें न्यूनतम 2 से अधिकतम 12 कमरे तक पाये जाते हैं।

शौका क्षेत्र सम्पूर्ण भोट क्षेत्र का हिस्सा है। शौका क्षेत्र 3000 फीट से 12000 फीट की ऊँचाई तक के क्षेत्र को शौका क्षेत्र कहा जा सकता है। इनके ग्रीष्मकालीन आवास ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं, ग्लेशियर एवं दर्रों से घिरा है। यहां एतिहासिक 'नम्पा–मार्मा दर्रा' है जो अब ग्लेशियर से बन्द हो चुका है। 'तिंकर दर्रा'

जहां से होकर आज भी शौका व्यापारी तिब्बत व्यापार के लिए जाते हैं, भी ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। काली नदी भारत एवं नेपाल दोनों देशों की भौगोलिक सीमाओं का निर्धारण करती है। यहां की भू–संरचना ऊबड़–खाबड़, पथरीली–कंकरीली मिट्टी से निर्मित है जो अनुपजाऊ है।

शौका क्षेत्र की भौगोलिक बनावट की तरह ही यहां की जलवायु भी विविधतापूर्ण है। यहां कुछ–कुछ दूरी पर ही जलवायु में भिन्नता देखी जा सकती है। सामान्यतः ग्रीष्मकालीन एवं शीतकालीन आवासों की जलवायु में अत्यधिक अन्तर दृटिगोचर होता है। जहां ग्रीष्मकालीन आवासों की जलवायु ठण्डी एवं बहुत ठण्डी है वहीं शीतकालीन आवासों में जाड़ा, गर्मी एवं बरसात तीनों ही ऋतुऐं पायी जाती हैं। यहां विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ एवं वन्य जीव पाये जाते हैं जो शौका भौगोलिक बनावट के अनुरूप दिखाई पड़ते हैं।

वस्तुतः शौका विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों में निवास करते हैं। शौका भौगोलिक बनावट एवं जलवायु से अनुकूलता बनाये रखने के लिए तथा व्यापारिक गतिविधियों के परिणामस्वरूप ही दो आवासों में निरन्तर प्रवर्जन की प्रक्रिया को सतत् रूप से बनाये हुए हैं, परन्तु निरन्तर हो रहे भू–स्खलन एवं यातायात के पारंपरिक कच्चे मार्गों में शौका कब तक अपने पैतृक आवासों से जुड़े रहेंगे, यह कहना अत्यन्त कठिन है।

शौका समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक संगठन के विभिन्न स्वरूप :

जनजातीय समुदायों में समाज एवं संस्कृति के विशिष्ट स्वरूपों के दर्शन होते हैं। सामान्यतः सामाजिक–सांस्कृतिक संगठनों के विभिन्न स्वरूपों से ही उस जनजाति समुदाय के विषय में ज्ञान प्राप्त किया जाता है। शौका समुदाय में भी सामाजिक संगठनों के मुख्य संघटकों जैसे–विवाह, परिवार, नातेदारी व्यवस्था, महिलाओं की दशा, कर्मकाण्ड, धार्मिक विश्वास, त्यौहार–उत्सव, लोककलाएँ एवं लोक साहित्य

आदि को अपने विशिष्ट स्वरूपों में देखा जा सकता है। यही सामाजिक– सांस्कृतिक संगठन शौका समुदाय को अन्य समाजों से पृथक बनाते हैं। यहाँ लनसब व्यवस्था पायी जाती है जिससे अभिप्राय है नातेदार, सम्बन्धियों में एक दूसरे के संस्कारिक कार्यों में शारीरिक एवं आर्थिक सहायता प्रदान करना। यही 'लनसब' व्यवस्था शौका समुदाय की सामाजिक व्यवस्था का आधार है। यहां किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति उसके लनसब पर ही निर्भर करती है।

पारम्परिक रूप में शौका समुदाय में संयुक्त परिवार व्यवस्था देखी जाती है। वर्तमान में आधुनिकता, शिक्षा एवं व्यावसायिक गतिशीलता के फलस्वरूप एकांकी परिवारों को बढ़ावा मिला है। इसके बावजूद भी यहाँ संयुक्त परिवार व्यवस्था को ही अच्छा माना जाता है। सामान्यतः परिवार में श्रम विभाजन जैसी कोई व्यवस्था नहीं होती। समय एवं परिस्थितियों के अनुसार कार्यों का स्वतः विभाजन हो जाता है। तब भी सामान्यतः घर के कार्यों को स्त्री एवं बाहर (व्यापार आदि) के कार्यों को पुरुषों के लिए समझा जाता है। परिवार में स्त्री को समान स्थान प्राप्त है एवं परिवार के सभी निर्णयों में उसकी पूर्ण सहमति अनिवार्य समझी जाती है। उसे पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है। यहां तक कि युवती अपना जीवन साथी चुनने के लिए भी स्वतंत्र है। शौका नारियां शिक्षित हैं एवं सरकारी, अर्द्धसरकारी सेवाओं तथा व्यापार आदि से भी जुड़ी हैं। सम्पूर्ण रूप में शौका नारी शौका समाज की वह धुरी है जिस पर सम्पूर्ण शौका समाज टिका है। वह कर्मठ, साहसी है एवं किसी भी स्थिति में पुरुषों से कम नहीं। वह विपरीत परिस्थितियों में भी जूझना जानती है। उसे तलाक एवं पुनर्विवाह जैसे अधिकार प्राप्त हैं। यहां विधवाओं को भी पुनर्विवाह की अनुमति है।

कालान्तर में शौका समाज में विवाह के अनेक स्वरूप प्रचलित थे। यहां अपहरण विवाह प्रचलन में था परन्तु शिक्षा के प्रचार–प्रसार के फलस्वरूप वर्तमान में यहां मात्र सामान्य विवाह अर्थात् दोनों पक्षों में सहमति से विवाह, गांधर्व विवाह एवं

सहमति सहपलायन विवाह प्रचलन में हैं। यहाँ ममेर, फुफेरे भाई–बहनों से विवाह को प्राथमिकता दी जाती है परन्तु आज शिक्षित युवा इतने नजदीकी सम्बन्धों में विवाह सम्बन्धों को नकारते हैं। यहां एक विवाह प्रथा ही दृष्टिगोचर होती है। बहुविवाह प्रथा यहां कभी नहीं रही। विवाह में मध्यस्थ (तरम्) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो लड़की को लड़के का विवाह प्रस्ताव देकर उसे विवाह के लिए सहमत कराती हैं। सगाई (चमैथौमो) रस्म के पश्चात धूमधाम से विवाह (ढामी) किया जाता है, जिसका स्वरूप आज भी पारम्परिक ही है। यहां दहेज प्रथा नहीं पायी जाती। शौका समाज में विवाह उत्सवों में आधुनिकता का प्रभाव नहीं पड़ा है परन्तु शनैः शनैः नई पीढ़ी के साथ विवाह में आधुनिकता एवं सभ्य समाजों की संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से नजर आने लगा है।

शौका समाज में 'रंङबंङ' का विशेष महत्व रहा है, जो अब लुप्तप्राय है। समाजशास्त्रियों एवं मानवशास्त्रियों द्वारा 'रंङबंङ' को युवा गृह के रूप में देखा गया है। रंङबंङ शौका समाज में सामाजीकरण की एक संस्था रही है जिसने कालान्तर में मनोरंजन एवं अन्त में युवा–युवतियों की संस्था का रूप ले लिया। फलस्वरूप अब इसका लोप हो चुका है। आज भी 'महफिल' एवं 'खौश्यिमो'' जैसी क्रियाओं के रूप में इसके स्वरूप को देखा जा सकता है।

विवाह के अतिरिक्त शौका जीवन पथ के अनेक संस्कार हैं, जिनके माध्यम से शौका पुरुष एवं स्त्री का सामाजीकरण होता है। 'कीपङ क्वोरमो एवं बढानी' मात्र लड़कों के लिए किए जाने वाले संस्कार हैं, जबकि बढानी मात्र परिवार के बड़े बेटे के लिए किया जाने वाला संस्कार है। जीवन पथ के संस्कारों में अंतिम संस्कार यहां 'श्राद्ध' एवं 'ग्वन' दो रूपों में किया जाता है। 'ग्वन' अन्तिम संस्कार का पारम्परिक रूप है जबकि श्राद्ध हिन्दू संस्कृति के प्रभाव के फलस्वरूप किया जाने वाला एवं कम खर्चीला संस्कार है। ग्वन खर्चीला होने के साथ ही 9 दिनों तक चलने वाला संस्कार है। जो वर्तमान में 3 दिनों में ही सम्पन्न किया जाने लगा है।

यहाँ देवी–देवताओं की पूजा के विशिष्ट तरीके हैं। सफेद कपड़े की 'धजा', अक्षत (स्यर्जै), दिया (क्यू), सत्तू का केक (धल), मदिरा (च्यक्ती), स्थानीय बीयर (सथानी), मिष्ठान, पूरियाँ एवं बकरी की बलि देकर विभिन्न देवी–देवताओं के लिए पूजा के पृथक तौर–तरीके हैं। सामान्यतः अक्षत, धलं एवं च्यक्ती के कुछ अंश आसमान की ओर उछालकर देवी–देवताओं को पूजा जाता है। देवी–देवताओं की पूजा के अतिरिक्त यहां बुरी आत्माओं को मनाने के लिए भी बलि दी जाती है। जिसे 'च्यंचिमो' अर्थात् फैंकना कहा जाता है। यहां विभिन्न त्यौहारों एवं उत्सवों को भी परम्परागत रूप में मनाया जाता है। शिवरात्रि के दिन धूमधाम से शिव की पूजा की जाती है। आषाढ मास की पूर्णिमा के दिन 'व्यास ऋषि' की पूजा की जाती है एवं अपने पारम्परिक उत्सवों को धूमधाम से मनाया जाता है। पारम्परिक उत्सवों में शौका अपने पारम्परिक वेशभूषा पहनते हैं। पुरुष रंगा (सफेद लम्बा कोटनुमा वस्त्र) एवं व्यंठलो (पगडी) तथा महिलाएं च्युं (कमर से ऊपर का वस्त्र), बाला (कमर से नीचे का वस्त्र) तथा च्युक्ति (सिर पर संकु आकार की टोपी) पहनती हैं। पुरुष एवं महिलाएं दोनों ही वस्त्रों को 'ज्यूज्यङ' (सफेद लम्बा वस्त्र) से कमर में बाधती हैं। महिलाएं सोने एवं चांदी के आभूषण पहनती हैं। कालान्तर में शौका पुरुष कान में आभूषण पहनते थे परन्तु वर्तमान में शौका पुरुषों में आभूषण पहनने की परम्परा नहीं दिखती।

शौका उत्सवों एवं त्यौहारों में 'बछौ' एवं 'बांधौ' जैसे निषेधों का भी महत्व है। बछौ जहां विशेष देवता के मंदिर का प्रसाद गांव से बाहर के अन्य लोगों को न देने की प्रथा है वहीं बाधौ त्यौहार अथवा उत्सव के दिन कोई कार्य न करने सम्बन्धी प्रथा है। इसके अतिरिक्त अनेक अन्य निषेध हैं जिनका शौका पालन करते हैं। 'लमा' जिसे शौका 'डंगरिया' भी कहते हैं को शौका समाज में अत्यन्त आदरणीय माना जाता है तथा उन्हें देवताओं के प्रतिनिधि के रूप में देखा जाता है। उनके द्वारा ही 'बांधौ' के लिए दिन निश्चित किए जाते हैं। 'च्यंच्यिमौ' एवं पूजा के सम्बन्ध में भी उनका ही

निर्णय मान्य होता है। पारिवारिक कष्टों एवं परेशानियों में 'लमा' को घर पर आमंत्रित किया जाता है। लमा अक्षत द्वारा गणना कर उन्हें निवारण के उपाय बताता है। लमा के द्वारा गणना के अतिरिक्त यहां अनेक विधाओं द्वारा भविष्य की गणना के तरीके विद्यमान हैं। जैसे– कलेजी देखकर, तारों की स्थिति देखकर भविष्य की गणना की जाती है।

शौका समाज की संस्कृति, उत्सव एवं त्यौहारों के समान ही यहां की लोक कलायें एवं साहित्य भी विशिष्ट हैं। यहां की स्त्रियाँ कालीन एवं वस्त्र बुनाई, कढ़ाई के कार्य में दक्ष हैं। पुरुष शिल्पकला में निपुण हैं। वे अपने आवास स्वयं बनाते हैं एवं उन पर स्वयं नक्काशियां करते हैं। शौका नृत्य एवं गायन में भी निपुण हैं। यहां अनेक प्रकार के लोग गीत प्रचलित हैं। शौका बोली में कहावतें एवं मुहावरे भी यहाँ प्रचलन में हैं। यहां अनेक लोककथायें हैं जिनके माध्यम से शौका पृष्ठभूमि को जाना जा सकता है।

शौका समाज एवं संस्कृति के विभिन्न संगठनों के अध्ययन के पश्चात् निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शौका समुदाय की अपनी एक विशिष्ट सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान है जिसे उन्होंने वर्तमान समय में भी सहेज कर रखा है। वस्तुतः आधुनिकीकरण, शिक्षा के प्रचार–प्रसार एवं व्यावसायिक गतिशीलता के दौर में वे सभ्य समाजों के प्रभाव में आये हैं एवं उनके सांस्कृतिक एवं सामाजिक संगठनों में प्रत्यक्ष रूप से इसके स्पष्ट प्रभाव को देखा जा सकता है। परन्तु तब भी वे अपनी परम्पराओं एवं मान्यताओं से बधे हैं। विज्ञान के युग में उन्हें अंधविश्वासी कहा जा सकता है परन्तु उन्हें अपने देवी–देवताओं पर अगाध विश्वास है। उनका यही विश्वास उनके सामाजिक–सांस्कृतिक संगठनों की नींव है। वे तुलनात्मक रूप में आज उच्च शिक्षित हैं एवं अपनी संस्कृति, परम्पराओं एवं सामाजिक व्यवस्था को समय एवं परिस्थितियों के अनुकूल बनाने हेतु परिवर्तित कर रहे हैं। आधुनिक परिवेश में भी

शौकाओं के सरल, सहृदय, सौम्य, कर्मठ स्वभाव एवं व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आया है।

शौका समुदाय की आर्थिक संरचना :

समाज एवं संस्कृति के समान ही जनजातीय समुदाय में विशिष्ट आर्थिक संरचना पायी जाती है। प्रस्तुत शोध में शौका समुदाय की आर्थिक संरचना का उसके व्यापार, व्यावसायिक स्थिति, आय के विभिन्न स्रोत, सम्पत्ति स्वामित्व, आहार प्रकृति, कृषि, पशुपालन एवं ऊन उद्योग के माध्यम से विस्तृत अध्ययन किया गया है।

शौका मूलरूप से व्यापारिक जनजाति है जो सदियों से तिब्बत व्यापार से जुड़ी है। प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में जुलाई से नवम्बर माह के मध्य तिब्बत जाकर व्यापार करना इनका पैतृक व्यवसाय रहा है। तिब्बत व्यापार ही शौका समुदाय की आजीविका का मुख्य स्रोत रहा है। वर्तमान समय में पारम्परिक तिब्बत व्यापार में अनेक परिवर्तन आये हैं जिसके फलस्वरूप शौका समुदाय आय के अन्य स्रोतों जैसे– सरकारी, अर्द्धसरकारी सेवाओं, ठेकेदारी, दुकान एवं अन्य छोटे–मोटे व्यवसायों की ओर आकर्षित हुआ है। अध्ययन दर्शाता है कि वर्तमान में सम्पूर्ण शौका परिवारों का 47.2% तिब्बत व्यापार, 32.5% कताई–बुनाई एवं अन्य व्यवसायों तथा 20.3% सरकारी एवं अर्द्धसरकारी सेवाओं से जुड़ा है। विषम भौगोलिक परिस्थितियों के फलस्वरूप शौका कृषि को व्यवसाय के रूप में विकसित नहीं कर पाये हैं। कृषि से मात्र एक फसल प्राप्त होती है। शौका क्षेत्र में उगायी जाने वाली फसलें फाफर, पल्ती, नपल ही शौका समुदाय के मुख्य आहार हैं। ठण्डे प्रदेश में निवास के फलस्वरूप मांस एवं मदिरा 'च्यक्ती' शौका समुदाय का मुख्य आहार एवं पेय पदार्थ है। अतिथि सत्कार में भी यही आहार एवं पेय प्रस्तुत किया जाता है। शौका क्षेत्र में अनेक प्रकार की जड़ी–बूटियां पायी जाती हैं जिन्हें एकत्र कर कुछ निर्धन शौका अपनी आजीविका चलाते हैं। प्रस्तुत शोध में आय के विभिन्न स्रोतों जैसे– व्यापार, नौकरी, कताई–बुनाई एवं अन्य व्यवसाय आदि से

शौकाओं की वार्षिक आय का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

आधुनिकीकरण एवं भूमण्डलीयकरण के दौर में शौका भी अपने पारम्परिक तिब्बत व्यापार के अतिरिक्त अन्य गैरपारम्परिक व्यवसायों की ओर आकर्षित हुए हैं एवं सन्तुष्ट प्रतीत होते हैं। 'च्यक्ती' जो शौका समुदाय में सांस्कारिक महत्व की वस्तु है उसे भी कुछ निर्धन शौका परिवारों द्वारा आय के स्रोत के रूप में अपनाया गया है। ऊनी वस्त्र उद्योग जो शौका समुदाय की सांस्कृतिक पहचान के साथ ही इसकी आय का स्रोत भी रहा है, आज मशीन से बुने वस्त्रों एवं कालीनों की अपेक्षा कीमती एवं अधिक श्रमसाध्य होने के फलस्वरूप अपनी अस्तित्व की रक्षा करने में असफल नजर आता है।

शौका समुदाय में सम्पत्ति स्वामित्व को दो ग्रीष्मकालीन एवं शीतकालीन आवासों की सम्पत्ति के रूप में बांटा जा सकता है। ग्रीष्मकालीन (पैतृक) आवासों में ही इनके पास कृषि योग्य भूमि उपलब्ध है जबकि शीतकालीन आवासों में इनके पास कृषि योग्य भूमि का अभाव है। ग्रीष्मकालीन आवासों में 25.5% शौका परिवारों के पास 6 नाली से कम भूमि, 36.6% परिवारों के पास 6 से 12 नाली भूमि, 13.82% परिवारों के पास 12 से 18 नाल भूमि, 11.30% परिवारों के पास 18 से 24 नाली भूमि, 8.13% परिवारों के पास 24 से 30 नाली भूमि, 4.9% परिवारों के पास 30 से 36 नाली भूमि है। पशुपालन जैसे पारम्परिक व्यवसाय आज शौका समुदाय से लुप्त हो चुके हैं। यहां मात्र अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही गाय, झुप्पू, घोड़े एवं खच्चर पाले जाते हैं। पशुओं के आंकड़ों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि 18.7% परिवारों के पास गाय नहीं है, 52.8% परिवार ऐसे हैं जिनके पास 1 या 2 गाय हैं, 2 या 4 गाय पालने वाले परिवार 15.5% हैं जबकि 4–6 गाय 9.8% शौका ही पालते हैं। मात्र 3.2% परिवार हैं जिनके पास 6–8 गाये हैं। 9.8% परिवारों के पास झप्पू नहीं हैं जबकि 16.3% परिवारों के पास 0–2 झप्पू हैं। 2–4 झप्पू रखने वाले परिवारों का

प्रतिशत 42.3 है जबकि 20.6% परिवार 4–6 झप्पू पालते हैं। 11.3% परिवार 6–8 झप्पू रखते हैं। 36.6 प्रतिशत परिवार ऐसे हैं जिनके पास घोड़े नहीं हैं जबकि 40.6% परिवारों के पास 0–2 घोड़े हैं। 2–4 घोड़े रखने वाले परिवारों का प्रतिशत 9.8 है जबकि 8.1% परिवार 4–6 घोड़े रखते हैं। 4.9% परिवार 6–8 घोड़े रखते हैं। 43.2% परिवारों के पास खच्चर नहीं हैं। 9.8% परिवार 0–2 खच्चर पालते हैं जबकि 21.1% परिवार 2–4 खच्चर पालते हें। 4–6 खच्चर पाले वाले परिवारों का प्रतिशत 14.6 है एवं 8.1% परिवार 6–8 खच्चर पाते हैं। मात्र 3.2% परिवार 8–10 खच्चर पाते हैं।

तिब्बत व्यापार के अतिरिक्त आय के विभिन्न नवीन स्रोतों के साथ ही शौका समुदाय में व्यय के प्रतिमान भी उसी दशा में परिवर्तित हुए हैं। अध्ययन से ज्ञात होता है कि 37.4% शौका अपने आय का 20–40% भाग अपने खाद्य पर व्यय करते हैं जबकि 35.8% शौका अपनी आय का 60–80% भाग अपने खाद्य पर एवं मात्र 26.8% शौका अपनी आय का 40–60% भाग अपने खाद्य पर व्यय करते हैं। 64% शौका अपनी आय का 0–20% भाग वस्त्रों पर व्यय करते हैं। शेष 36% शौका अपनी आय का 20–40% भाग अपने वस्त्रों पर व्यय करते हैं। आज आधुनिकता के दौर में शौका अपने वस्त्रों के लिए पूर्णतः बाजार पर निर्भर हैं। शौका युवा नये–नये फैशन के वस्त्र पहना पसन्द करते हैं। शौका स्वास्थ्य खराब होने पर 'लमा' धामी से झाड़फूंक को प्राथमिकता देते हैं परन्तु ठीक न होने पर डाक्टर को दिखाते हैं। यद्यपि स्वास्थ्य पर व्यय निश्चित नहीं होता। न ही यह सदा किया जाने वाला व्यय है तब भी 53% शौका ही अपनी आय का 0–20% भाग अपने स्वास्थ्य पर व्यय करते हैं। क्योंकि शौका परिश्रमी समुदाय है एवं उसे मनोरंजन की अत्यन्त आवश्यकता महसूस होती है। मनोरंजन के पारम्परिक साधनों से हटकर कभी–कभी आधुनिक साधनों पर भी शौका व्यय करते हैं। सभी (100%) शौका अपनी आय का 0–20% भाग अपने मनोरंजन पर व्यय करते हैं। मादक पेय जो शौका संस्कृति का महत्वपूर्ण एवं अभिन्न

अंग है सर्दियों में ऊष्मा प्रदान करता है साथ ही परिश्रम के बाद थकान भी दूर करता है। सभी शौका मादक पेय पर अपनी आय का 0–20% भाग व्यय करते हैं।

वर्तमान में शौका जहां अपने पारम्परिक तिब्बत व्यापार के अतिरिक्त अन्य व्यवसायों की ओर आकर्षित हुए हैं वहीं आज भी अपने पारम्परिक व्यवसाय का मोह नहीं छोड़ पाये हैं। वस्तुतः कुछ शौका अवश्य ही आय के अन्य स्रोतों की ओर आकर्षित हुए हैं परन्तु सम्पूर्ण रूप में आज भी शौका जनजाति का मुख्य व्यवसाय तिब्बत व्यापार ही है। जिस पर सम्पूर्ण शौका आर्थिक संरचना टिकी हुई है।

अन्तः, अन्तर्जनजातीय एवं अन्तराजनजातीय सम्बन्ध :

वर्तमान नवीन परिस्थितियों में कोई भी समुदाय अन्य समाजों से पृथक नहीं रह सकता। शौका समुदाय में भी शोध के दौरान अन्तः, अन्तर्जनजातीय एवं अन्तराजनजातीय सम्बन्ध देखे गये हैं।

प्रस्तुत अध्ययन समग्र के अन्तर्गत व्यास गांव विकास समिति के दो ग्रामों 'छांगरू एवं तिकर' की विभिन्न उपजातियों के बीच परस्पर वैवाहिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक अन्तः सम्बन्ध पाये जाते हैं। छांगरू ग्राम की विभिन्न उपजातियों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित नहीं होते जबकि तिंकर ग्राम की विभिन्न उपजातियों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध पाये जाते हैं।

शौका समुदाय का नेपाल की किसी भी अन्य जनजाति समुदाय के साथ अन्तर्जनजातीय सम्बन्ध दृष्टिगोचर नहीं होते। परन्तु भारत के पिथौरागढ़ जनपद के धारचूला तहसील में निवास करने वाली 'भोटिया' जनजाति के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक समानता के फलस्वरूप वैवाहिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक सम्बन्ध देखने को मिलते हैं। जबकि दो विभिन्न देशों राष्ट्रों में निवास करने के फलस्वरूप इनमें राजनैतिक अन्तर सम्बन्ध नहीं पाये जाते। सदियों से तिब्बत व्यापार के

फलस्वरूप शौका जनताति के तिब्बती समुदाय से भी आर्थिक अन्तर सम्बन्ध रहे हैं।

शौका क्षेत्र में निवास करने वाली अजनजातीय समुदायों से भी शौका समुदाय के अन्तराजनजातीय सम्बन्ध देखने को मिलते हैं। शौका अजनजातीय समाजों से मात्र आर्थिक एवं राजनैतिक सम्बन्ध ही स्थापित करते हैं। सामान्यतः शौका अपने सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों एवं उत्सवों में अजनजातीय समाज के लोगों को आमंत्रित नहीं करते परन्तु वर्तमान में व्यावसायिक एवं राजनैतिक गतिविधियों के फलस्वरूप कुछ शौका अपने अजनजातीय मित्रों को अपने पारिवारिक उत्सवों में आमंत्रित करने लगे हैं एवं अजनजातीय मित्रों के पारिवारिक उत्सवों में भी सम्मिलित होने लगे हैं।

शोध अभिकल्प एवं पद्धति शास्त्र :

अध्ययन समस्या की प्रकृति एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा वर्णानात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। जिसके माध्यम से शौका समुदाय की आवासीय दशाओं, सामाजिक–सांस्कृतिक संगठन के विभिन्न स्वरूपों, शौका समुदाय की अर्थव्यवस्था तथा नेपाल–तिब्बत के बीच अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की विद्यमान दशाओं एवं सम्भावनाओं का वर्णानात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा सके।

अध्ययन समग्र :

पश्चिमी नेपाल के जनपद दार्चुला की व्यास घाटी में स्थित शौका ग्राम छांगरू एवं तिंकर में रहने वाली शौका समुदाय की कुल 746 जनसंख्या जो 123 परिवारों में निवास करती है ही प्रस्तुत अध्ययन का समग्र है। सम्पूर्ण अध्ययन समग्र से अध्ययन इकाइयों के चयन हेतु निम्न लिखित निदर्शन पद्धति का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन इकाइयों का चयन :

अध्ययन समग्र की प्रकृति एवं उद्देयों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा संगणनात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए सम्पूर्ण समग्र को अध्ययन हेतु चुना गया है। तत्पश्चात् समस्या से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों के संदर्भ में प्राथमिक सूचनाओं को संकलित करने हेतु उद्देश्य पूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा प्रत्येक परिवार के मुखिया को उत्तरदाता के रूप में चुना गया है। इस प्रकार कुल चयनित इकाइयों की संख्या 123 है।

तथ्य संकलन की प्रविधि एवं उपकरण :

अध्ययन समस्या से सम्बन्धित तार्किक, विश्वसनीय एवं वैषयिक प्राथमिक तथ्यों या सूचनाओं की प्राप्ति हेतु साक्षात्कार अनुसूची एवं सहभागी अवलोकन पद्धति का प्रयोग किया गया है ताकि अध्ययन इकाइयों से प्राप्त प्राथमिक सूचनाओं के साथ ही शौका समुदाय की आवासीय, सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक दशाओं का अवलोकन किया जा सके। प्राथमिक तथ्यों की प्राप्ति हेतु सहभागी अवलोकन एवं साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है तथा द्वितीयक तथ्यों की प्राप्ति हेतु द्वितीयक स्रोतों जैसे उपलब्ध साहित्य, संदर्भ ग्रन्थ, शोध प्रतिवेदन, शोध निबन्ध, शोध पत्र–पत्रिकाओं में उपलब्ध सूचनायें, वैयक्ति एवं सार्वजनिक प्रलेखों में उपलब्ध सूचनाओं का समुचित प्रयोग किया गया है।

❖ ❖ ❖

संदर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

एकॉफ, आर0एल0	1953	दि डिजाइन आफ सोशियल रिसर्च, दि यूनिवर्सिटी आफ शिकागो, प्रेस शिकागो।
एल्हॉन्स, डी0एन0	1960	फन्डामेन्टल्स आफ स्टेटिक्स, किताब महल, दिल्ली।
बिष्ट, बी0एस0	1982	सोशियल स्ट्रक्चर एण्ड आर्गेनाइजेशन ऑफ राजी ट्राइब आफ कुमाऊँ, शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित) कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल।
-----	1992	उत्तराखण्ड की भोटिया जनजाति, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
------	1993	राजी : ए ट्राइब आफ इण्डो–नेपाल बार्डर ऑफ उत्तराखण्ड, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
-------	1994	ट्राइब्स ऑफ इण्डिया, नेपाल एण्ड तिब्बत बोर्डरलैण्ड: ए स्टडी ऑफ कलचरल ट्रान्सफोरमेशन, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
------	1997	उत्तरांचल : ग्रामीण समुदाय, पिछड़ी जाति एवं जनजातीय परिदृश्य, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, मालरोड अल्मोड़ा।
-----	1998	सोसाइटी एण्ड कल्चर आफ दि इलोप पेयरस् ए केश स्टडी आफ दि अनवाल कम्यूनिटी आफ इण्डो–तिब्बत बार्डर आफ उत्तराखण्ड, टाइप प्रोजेक्ट फाइनैन्सियली सपोर्टेड बाई इण्डियन कॉउसिल आफ सोशियल साइन्स रिसर्च, नई दिल्ली।
बिसारिया, एस0डी0	1971	गुज्जरस् ऑफ कश्मीर, (शोध प्रबन्ध) आगरा विश्व विद्यालय, अप्रकाशित।
बरेमन, जी0डी0	1972	हिन्दूज ऑफ हिमालयाज, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया प्रेस।

बिडनी, डी0	1953	थियोरिटिकल एन्थ्रोपोलाजी।
बोआस, फ्रैज	1911	दि माइन्ड आफ प्रिमिटिव मैन, दि मैकमिलन कम्पनी, लन्दन।
बारनेट, एच0जी0	1953	इनोवेशन : दि बेसिस ऑफ द कल्चरल चेंन्ज, न्यूयार्क।
ब्राउन, रेडक्लिफ, ए0आर0, लिन्टन एण्ड हर्सकोविट्ज, एम0जे0	1936	मैमोरैन्डम आन दि स्टडी आफ एकल्परेशन, अमेरिकन एन्थ्रोपोलोजिस्ट्स।
ब्राउन, रेडक्लिफ	1952	स्ट्रक्चर एण्ड फंकशन इन प्रीमिटिव सोसाइटी, लन्दन।
बेली, एफ0 जी0	1963	पॉलिटिकल चेन्ज इन केन्डमालस इन रूरल प्रोफाइल, (इड.) श्रीनिवास एम0एन0, बाम्बे।
बोटोमोर, टी0बी0	1964	सोशियोलॉजी, लन्दन
बार्थ, एफ0	1961	नोमड्स ऑफ साउथ परसिया, वेवलैण्ड प्रेस : प्रोसपेक्ट हाइट, इलिनोड्स।
बेन्डिक्ट, रूथ	1904	पैटर्नस् ऑफ कल्चर, रौटलेज एण्ड क्रेगन पॉल लिमिटेड, लन्दन।
भूषण, बी0	1989	डिक्शनरी ऑफ सोशियोलॉजी, अनमोल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
चेज, एस0	1938	दि टाइरानी ऑफ वर्डस्, न्यूयार्क।
कैपलो, टी0	1975	सोशियोलॉजी, प्रेन्टिस, हॉल सीरीज इन सोशियोलॉजी, लन्दन।
चटर्जी, वी0वी0	1975	भोटियाज ऑफ इन्डो–तिब्बतियन बार्डर ऑफ उत्तराखण्ड, रिसर्च प्रोजैक्ट (अप्रकाशित), गांधीयन इन्स्टीट्यूट आफ स्टडीज, वाराणसी।
चतुर्वेदी, जे0सी0	1954	मैथमेटिक्स स्टेटिक्स, स्टूडेन्स फ्रेन्डस एण्ड कम्पनी, आगरा।
चेज, स्टूवर्ट	1956	दि प्रोपर स्टडी आफ मैनकाइन्ड, न्यूयार्क।

चट्टोपाध्याय, पी.के.	1962	हिमालय परे कैलाश मानसरोवर, ओरियेन्ट बुक कम्पनी, कलकत्ता।
देसाई, आई0पी0	1964	सम अस्पैक्ट्स आफ फैमिली इन मालवा, एशिया पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
डबराल, एस0पी0	1965	उत्तराखण्ड के भोटांतिक, वीरगाथा प्रकाशन, दुगड्डा।
दुर्खीम, ई0	1895	दि डिविजन ऑफ लेवर इन सोसाइटी, मैकमिलन कम्पनी, लन्दन।
दास, आर0के0	1988	दि ट्राइबल सोशियल स्ट्रक्चर, इन्टर इण्डिया पब्लिकेशन, राज गार्डन एक्शटेन्शन, नई दिल्ली।
ईगन, फ्रेड	1950	सोशियल आर्गनाइजेशन आफ दि वैस्टर्न प्यूब्लोस, शिकागो।
इवान्स प्रिपार्ड, ई0ई0	1940	दि न्यूर, क्लारेन्डन प्रेस, आक्सफोर्ड, लन्दन।
इलियट एण्ड मेरिट	1950	सोशियल डिजोर्गनाइजेशन, हार्पर एण्ड ब्रास, न्यूयार्क।
फर्थ, रेमण्ड	1951	एलीमेट्स आफ सोशियल आर्गनाइजेशन, लन्दन।
फुरेर–हाइमेन्डार्फ वान	1975	हिमालयन ट्रेडर्स, मूरे, लन्दन।
फकलियाल, एच0एस0	1983	रङ जनजाति, छिलासों, धारचूला, पिथौरागढ़।
गिलिन एण्ड गिलिन	1950	कल्चरल सोशियोलॉजी, दि मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क।
गुप्ता, वी0पी0	1974	ट्राइबल इकोनोमी इन बघेलखण्ड, शोधप्रबन्ध (अप्रकाशित) रेवा यूनिवर्सिटी, रेवा।
गोस्वामी, वी0वी0	1972	दि ट्राइब्स ऑफ आसाम : ए फ्यू कमेन्टस ऑन देयर सोसियल एण्ड कल्चरल टाइज विद् नान ट्राइब्स, इन ट्राइबल सिचुएशन इन इण्डिया, वाई के0एस0 सिंह, इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ इडवान्स स्टडी, शिमला।
गोल्डसटाइन, एम.सी. एण्ड बील, सी0	1991	नोम्डस् आफ वेस्टर्न तिबेट। यूनिवर्सिटी आफ कैलीफोर्निया प्रेस, बरकले।

गुडे, डब्ल्यू.जे. एण्ड हाट, पी0के0	1952	मैथड्स इन सोशियल रिसर्च, मैक ग्रोहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क।
जिन्सवर्ग, एम0	1947	रीजन एण्ड अन रीजन इन सोसाइटी, लन्दन।
ह्याकावा, एस0एल0	1941	लैन्गवेज इन एक्शन, न्यूयार्क।
हर्सकोविट्स, एम0जे0	1955	कल्चरल एन्थ्रोपोलोजी, आक्सफोर्ड एण्ड आईबीएच पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली।
–––––	1956	मैन एण्ड हिज वर्क्स, एलफ्रैड नोप्ट, न्यूयार्क।
होटबल, ई0ए0	1958	मैन इन दि प्रिमिटिव वर्ड, मैक ग्रैव हिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क।
हर्सकोविट्ज एम0जे0	1955	कल्चरल एन्थ्रोपोलॉजी, आक्सफोर्ड एण्ड आई बी एच पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली।
हूण, विनीता	1996	लिविंग ऑन दि मूवज, सेज पब्लिकेशन नई दिल्ली।
हसन, आमिर	1997	दि बुक्साज आफ तराई, बी0आर.0 पब्लिशिंग कारपोरेशन, नई दिल्ली।
जॉनसन, डी0	1969	दि नेचर ऑफ नोमिडिज्म, 'ए कम्परेटिव स्टडी आफ पास्टेर्ल माइग्रेशन इन साउथ वेस्टर्न, एशिया एण्ड नादर्न अफ्रीका, शिकागो।
जामू, पी0एस0	1974	चेन्जिंग सोशियल स्ट्रक्चर इन रूरल पंजाब, स्टरलिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
क्रोएवर, ए0एल0	1948	एन्थ्रोपोलॉजी, हारकोर्ट, ब्रास एण्ड कम्पनी न्यूयार्क।
–––––	1952	दि नेचर आफ कल्चर, दि यूनिवर्सिटी आफ शिकागो प्रेस, शिकागो।
क्लूखोन, सी0 एण्ड केली, एम0	1945	दि कौनसेप्ट आफ कल्चर, दि साइंस आफ़ मैन इन वर्ल्ड क्राइसिस (एडि0) लिनटन आर0, कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क।

कालेनड्रा, पी0एम0	1967	रीजनल डिफ्रेसेज इन इण्डियन फैमिली स्ट्रक्चर, इन : रीजनल एण्ड रीजनलिज्म इन साउथ एशियन स्टडीज; ए.डि. रॉबर्ट आई, क्रेन, ड्यूक यूनिवर्सिटी।
कोचर, वी0	1970	सोशियल आर्गेनाइजेशन अमंग दि सन्थाल्स, कलकत्ता।
लाल, पन्ना	1942	हिन्दू कस्टमरी लॉ इन कुमाऊँ, गवर्नमेंट प्रेस, इलाहाबाद।
मैनजर, एच0सी0	1958	प्रैक्टिकल सोशियोलॉजी एण्ड सोशियल प्राब्लम्स।
मार्क्स, कार्ल	1943	आर्टिकल्स आन इण्डिया, बॉम्बे।
———	1904	ए कन्ट्रीव्यूशन इन दि क्रिटिक ऑफ पॉलिटिकल इकोनोमी, दि इन्टरनेशनल लाइब्रेरी पब्लिशिंग कम्पनी, न्यूयार्क।
मैनहेइम, के0	1936	सोशियोलाजी एण्ड यूथेपिया, लन्दन।
मरडोक, जी0पी0	1949	सोशियल स्ट्रक्चर, दि मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क।
मजूमदार, डी0एन0 एण्ड मदन, टी0एन0	1956	सोशियल एन्थ्रोपोलॉजी, एशियन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
मजूमदार, डी0एन0	1944	रेशेज एण्ड कल्चर्स् ऑफ इण्डिया, एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
———	1961	रेशेज एण्ड कल्चर्स ऑफ इण्डिया, एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
———	1963	सोशियल एन्थ्रोपोलॉजी, एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
———	1986	एन इन्ट्रोडक्शन इन सोशियल एन्थ्रोपोलॉजी, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा।
———	1972	ए स्टडी ऑफ ट्राइब्स कास्ट कन्टीन्यूम एण्ड दि प्रोसेस ऑफ संस्कृताइजेशन अमंग दि बोडो स्पीमिग ट्राइब्स ऑफ आसाम इन ट्राइबल सिचुिएशन इन इण्डिया, वाई के0 कुरेश सिंह, इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ एडवान्सड स्टडी, शिमला।

मैकाइवर, आर0एम0 एण्ड पेज, सी0एच0	1953	सोसाइटी, दि मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क।
मदन, टी0एन0 एण्ड सरन, जी0	1962	इण्डियन एन्थ्रोपोलॉजी, एशिया पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
मुखर्जी, बी0	1963	कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ दि किनशिप स्टिम ऑफ द पोलिएन्ड्रस कम्यूनिटीज, ईस्टर्न एन्थ्रोपोलॉजिस्ट वोल्यूम 16 नं0 1.
माथुर, पी0आर0जी0	1979	दि खसी ऑफ मेघालय, कोसमो पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
मुखर्जी, सी0	1962	सन्थाल्स, मुखर्जी एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, कलकत्ता।
माथुर, एस0	1977	मैरिज एलोंग थारूज ऑफ चन्दन चौकी, ईस्टर्न एन्थ्रोपोलॉजिस्ट, वोल्यमू 20 नं0 1.
नैडेल एस0एफ0	1956	अण्डरस्टैंडिंग प्रीमिटिव पीपुल्स, ओसेनिया।
———	1962	दि थ्यौरी आफ सोशियल स्ट्रक्चर, कोर एण्ड वेस्ट लि0 लन्दन।
आगबर्न, डब्ल्यू0 एफ0 एण्ड निमकॉफ एम0	1979	ए हैण्ड बुक आफ सोशियोलॉजी, यूरेशिया।
ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी	1983	कोटो बाई नदीम हसन इन ट्राइबल इण्डिया टूडे, हसाम पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
आरलोव, बी0एस0	1982	नेटिव एनडीन पास्टोरलिस्ट ट्रेडिशनल एडापटेशन एण्ड रीसेन्ट चेन्ज इन पी0सी0 सालडनमैन कनटम्प्रेरी नोमडिक एण्ड पास्टोरल पीपुल्स, विलियमवर्ग।
पार्सन, टी0	1952	दि सोशियल सिस्टम, डि फ्री प्रेस, ग्लानकोइ, इलिनोइस्।
———	1949	एशेज इन सोशियोलाजिकल थ्योरीज लाइट एण्ड लाइफ पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

पेरी, डब्ल्यू0 जे0	1923	चिल्ड्रन आफ दि सन, लन्दन।
प्रसाद, सैलेश्वर	1974	वेयर दि थ्री ट्राइब्स मीट, इण्डियन नेशनल पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद।
पन्त, एस0डी0	1935	दि सोशियल इकोनोमी आफ हिमालयाज, जार्ज एलेन एण्ड उन्विन, लन्दन।
प्रसाद, एस0	1974	व्हेयर दि थ्री ट्राइब्स मीट, इण्डियन इन्टरनेशनल पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद।
पारिक, आर0एन0	1977	ट्राइबल कल्चर इन फलक्स, बी0आर0 पब्लिशिंग कारपोरेशन, नई दिल्ली।
पीयर्सन्स, कार्ल	1911	दि ग्रामर आफ साइन्स, लन्दन।
पिडिंगटन, राल्फ	1952	एन इन्ट्राडक्शन टू सोशियल एन्थ्रोपोलॉजी, ओलीवर एण्ड ब्याड, लन्दन।
रायपा, आर0एस0	1974	शौका : सीमावर्ती जनजाति, रायपा ब्रदर्स, धारचूला, पिथौरागढ़।
राना, बी0के0	2000	एन इथनोग्राफिक स्टडी आन दि शौकाज ऑफ व्यास वैली, जनजाति : जनरल ऑफ नेशनलिटीज ऑफ नेपाल, वर्ष 2, अंक 1, राष्ट्रीय जनजाति विकास समिति, अनामनगर काठमाण्डू, नेपाल।
राय, एच0एल0डी0	1977	सोशियो–रिलिजन स्टडी आफ दि जैन्तिया ट्राइब (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध), गोहाटी यूनिवर्सिटी।
राहुल, आर0	1970	दि हिमालयन बोर्डरलैण्ड, विकास पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
रैडफील्ड, आर0	1941	दि फोक कल्चर ऑफ युक्तान यूनिवर्सिटी आफ शिकागो प्रेस, शिकागो।
रयूटर, ई0बी0	1946	हैण्ड बुक आफ सोशियोलॉजी।
स्पैन्सर, एच0	1906	प्रिन्सिपल आफ सोशियालॉजी, वोल्यूम 1, न्यूयार्क।
———	1906	फर्स्ट प्रिन्सिपल, डी0 एपलेशन एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क।
शेरिंग, सी0ए0	1974	वैस्टर्न तिब्बत एण्ड द इण्डियन बार्डरलैण्ड, कोस्मो पब्लिकेशन्स, दिल्ली।

साउदरलैण्ड एण्ड वुड़वर्ड	1948	इन्ट्रोडक्ट्री सोशियोलाजी, जे0बी0 लिपिन कोट0 कम्पनी, न्यूयार्क।
शेरिंग, सी0ए0	1907	नोट्स आन भोटियाज ऑफ अल्मोड़ा एण्ड ब्रिटिश गढ़वाल, एशियाटिक सोसाइटी बंगाल।
सक्सेना, आर0एन0	1956	सोशियल इकोनोमी ऑफ ए पोलिएन्ड्रस पीपुल, आगरा यूनिवर्सिटी स्टडी सीरीज 1, आगरा।
सरकार, जयन्त	1989	सोसाइटी, कल्चर एण्ड इकोलॉजी एडापटेशन अमंग थ्री ट्राइब्स आफ अरुणाचल प्रदेश, कलकत्ता।
सेलाटो बर्नार्ड	1989	नॉमड्स एट. सेडेटेरीजेशन बारनियो : हिस्टोरिक इकोनोमिक एट. सोशियल (इन फ्रैंच) दि बुक रिव्यूड बाई पैट्रेशिया उबेरियो इन ईस्टर्न एन्थ्रोपोलोजिस्ट वाल्यूम–44 नं0 2, 1991, इथनोग्राफिक एण्ड फोक कल्चर सोसाइटी, लखनऊ।
सिंह, वाई	1986	मार्डनाइजेशन ऑफ इण्डियन ट्रेडिसन्स, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
श्रीवास्तव, एस0के0	1958	थारूज : ए स्टडी इन कल्चर डायनामिक्स, आगरा यूनिवर्सिटी प्रेस, आगरा।
टॉयलर, ई0बी0	1974	प्रिमिटिव कल्चर, न्यूयार्क।
———	1988	डिक्शनरी आफ एन्थ्रोपोलॉजी, गोयल साब, जवाहर नगर, दिल्ली।
विद्यार्थी, एल0पी.0	1971	दि खरिया, दैन एण्ड नॉव, रिसर्च प्रोजक्ट (अप्रकाशित), आई0सी0 एस0एस0आर0, नई दिल्ली।
विसलर, सी0	1922	दि अमेरिकन इण्डियन, न्यूयार्क।
———	1929	एन इन्ट्रोडक्शन टू सोशियल एन्थ्रोपोलॉजी, हेनरी हॉल्ट एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क।
व्यास, डी0	2002	कादिम्बिनी के लेख से गुस्से में रड जनजाति, जनजातियों की आवाज, मासिक हिन्दी समाचार पत्र, मुनस्यारी, पिथौरागढ़।
यंग, पी0वी0	1960	साइंटिफिक सोशियल सर्वे एवं रिसर्च, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बाम्बे।

पश्चिमी नेपाल के व्यास घाटी के 'शौका' जनजाति का सामाजिक-मानवशास्त्रीय अध्ययन

Socio-Anthropological Study of the 'Shauka' Tribe of Vyas Valley in Western Nepal

साक्षात्कार अनुसूची
Interview Schedule

शोध निर्देशक :-
डा. बी.एस. बिष्ट,
रीडर,
समाजशास्त्र विभाग,
एम.बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तरांचल

शोधार्थी :-
दिनेश व्यास,
समाजशास्त्र विभाग,
एम.बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तरांचल

साक्षात्कार अनुसूची

पश्चिमी नेपाल की व्यास घाटी के 'शौका' जनजाति का सामाजिक-मानवशास्त्रीय अध्ययन

1.00 परिचय :

1.01 परिवार के मुखिया का नाम : ....

1.02 लिंग : पुरुष ☐ स्त्री ☐

1.03 आयु वर्षों में : 00-20 ☐
20-30 ☐
30-40 ☐
40-50 ☐
50 से अधिक ☐

1.04 उप वर्ग का नाम :

1.05 कुल नाम :

1.06 धर्म :

1.07 व्यवसाय : भूमिहीन मजदूर ☐ कृषि ☐ सरकारी सेवा में ☐
गैर सरकारी सेवा ☐ व्यापार ☐
अन्य..

1.08 शैक्षिक स्तर : प्राथमिक ☐ निम्न माध्यमिक ☐ माध्यमिक ☐
स्नातक ☐ परास्नातक ☐
अन्य..

1.09 वैवाहिक स्थिति : विवाहित ☐ अविवाहित ☐ विधवा ☐
विधुर ☐ तलाकशुदा ☐ पृथक ☐
अन्य..

2.00 पारिवारिक संरचना :

2.01 परिवार का स्वरूप : एकांकी ☐ संयुक्त ☐

2.02 विवाह के आधार पर : एक पति विवाह ☐ एक पत्नी विवाह ☐
बहु पति विवाह ☐ बहु पत्नी विवाह ☐

2.03 परिवार के सदस्यों की संख्या :

सदस्य/सम्बन्ध	संख्या	आयु	वैवाहिक स्थिति		विधवा	विधुर	पृथक
			विवाहित	अविवाहित			
माता							
पिता							
पति/पत्नी							
पुत्र							
पुत्री							
भाई							
बहिन							
अन्य							

2.04 परिवार के सदस्यों का व्यवसाय :

सदस्य/सम्बन्ध	व्यवसाय					मासिक आय
	भूमिहीन मजदूर	कृषक	सरकारी नौकरी	गैर सरकारी नौकरी	अन्य	
माता						
पिता						
पति/पत्नी						
पुत्र						
पुत्री						
भाई						
बहिन						
अन्य						

2.05 परिवार के सदस्यों की शैक्षिक स्थिति :

सदस्य/सम्बन्ध	शैक्षिक स्थिति							
	निरक्षर	साक्षर	प्राथमिक	निम्न माध्यमिक	माध्यमिक	स्नातक	परास्नातक	अन्य
माता								
पिता								
पति/पत्नी								
पुत्र								
पुत्री								
भाई								
बहिन								
अन्य								

2.06 परिवार के सदस्यों में कार्य का बँटवारा होता है : हाँ ☐ नहीं ☐

2.07 कार्यों के बँटवारे का आधार : आयु ☐ लिंग ☐

साक्षरता ☐ अन्य...

2.08 परिवार में विवाहित महिला का कार्य :

2.09 परिवार में विवाहित पुरुष का कार्य :

2.10 परिवार में अविवाहित युवती का कार्य :

2.11 परिवार में अविवाहित पुरुष का कार्य :

3.00 आर्थिक संरचना :

3.01 वर्तमान मुख्य व्यवसाय : .... आय प्रति वर्ष..

3.02 आय के अन्य स्रोत

स्रोत	**अनुमानित आय**
कृषि	....
व्यापार	....
नौकरी	....
अन्य	....
1.	....
2.	....
3.	....
4.	....
कुल आय	....
	....

3.03 क्या आय के प्राकृतिक स्रोत हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

3.04 आय के मुख्य प्राकृतिक स्रोत क्या हैं : ....

3.05 क्या आप आधुनिक/गैरपारम्परिक आर्थिक स्रोतों से संतुष्ट हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

3.06 यदि नहीं तो क्यों : ....

3.07 सम्पत्ति स्वामित्व :

मकान	स्वयं का		किराये का		सरकार द्वारा प्रदत्त		अन्य		कमरों की संख्या
शीतकालीन आवास	कच्चा	पक्का	कच्चा	पक्का	कच्चा	पक्का	कच्चा	पक्का	
ग्रीष्मकालीन आवास	कच्चा	पक्का	कच्चा	पक्का	कच्चा	पक्का	कच्चा	पक्का	

भूमि नाली में	अनउपजाऊ	उपजाऊ	सिंचित	असिंचित	अन्य

पालतू जानवर	गाय	बैल	घोड़ा	खच्चर	झुप्पू	भेड़	बकरी	अन्य

4.00 आहार प्रकृति :

4.01 शुद्ध शाकाहारी : ☐

4.02 माँसाहारी : ☐

4.03 शुद्ध शाकाहारी एवं माँसाहारी : ☐

4.04 आहार सामग्री : गेहूँ ☐ चावल ☐ ज्वार ☐ बाजरा ☐
मक्का ☐ जव ☐ रागी ☐
अन्य..

4.05 दाल : चना ☐ उड़द ☐ मूंग ☐ पलथी ☑
मटर ☐ सेम ☐ मसूर ☐ सोया ☑
अन्य..

4.06 तिलहन : मूँगफली ☐ सरसों ☐ तिल ☐ लाई ☐
अन्य..

4.07 पेय : क्या पुरुष मादक पेय पीते हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

4.08 क्या महिलाएं मादक पेय पीती हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

4.09 क्या मादक पेय घर में बनाया जाता है : हाँ ☐ नहीं ☐

4.10 क्या मादक पेय बाजार से खरीदा जाता है : हाँ ☐ नहीं ☐

4.11 मादक पेय किसके बदले प्राप्त किया जाता है :
रुपये ☑ अनाज ☐ मजदूरी (श्रम) ☐ जमीन ☐
अन्य..

4.12 अन्य पेय :

दूध ☐ दही ☐ मट्ठा ☐

अन्य...

4.13 मादक पदार्थ जो पुरुषों द्वारा प्रयोग किये जाते हैं :

बीड़ी ☐ सिगरेट ☐ तम्बाकू ☐ चिलम ☐ हुक्का ☐

अन्य...

कोई नहीं ☐

4.14 मादक पदार्थ जो स्त्रियों द्वारा प्रयोग किये जाते हैं :

बीड़ी ☐ सिगरेट ☐ तम्बाकू ☐ चिलम ☐ हुक्का ☐

अन्य...

कोई नहीं ☐

5.00 जीवन पथ के संस्कार एवं धार्मिक गतिविधियाँ

5.01 आपके समाज में जीवन पथ के कौन-कौन से प्रमुख संस्कार हैं :-

....

....

5.02. आप अपने बच्चों का नामकरण कैसे करते हैं :

....

....

5.03 आपके समाज में विवाह की उम्र क्या है :

लड़की - 15 वर्ष से कम ☐ 16-19 वर्ष ☐ 20 से ऊपर ☐

लड़का- 18 वर्ष से कम ☐ 19-22 वर्ष ☐ 23 से ऊपर ☐

5.04 क्या आपके समाज में विधवा पुनर्विवाह को प्राथमिकता दी जाती है :- हाँ ☐ नहीं ☐

5.05 विधवाओं को आपके समाज में किस दृष्टि से देखा जाता है ?

आदर की दृष्टि से ☐ साधारण ☐ हेय दृष्टि से ☐

अन्य...

....

5.06 आपके समुदाय में विवाह - विच्छेद की अनुमति है- हाँ ☐ नहीं ☐

विशेष परिस्थितियों में...

5.07 आपके समाज में किस को तलाक के लिए अन्तिम मान्यता दी जाती है।

कोर्ट द्वारा ☐ जातीय पंचायत द्वारा ☐ मध्यस्थता द्वारा ☐

अन्य ....

5.08 क्या तलाक के लिए स्त्री पुरुष दोनों को समान अधिकार हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

5.09 क्या आपके समाज में अन्तर्जातीय विवाह का प्रचलन है : हाँ ☐ नहीं ☐

5.10 क्या आपके समाज में दहेज प्रथा का प्रचलन है : हाँ ☐ नहीं ☐

5.11 क्या आपके समाज में कन्या मूल्य लिया जाता है : हाँ ☐ नहीं ☐

5.12 क्या विवाह के लिए वर्ष के कुछ महीने निषिद्ध माने जाते हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

यदि हाँ तो कौन-कौन से महीने ....

....

5.13 आपके समाज में अन्तिम संस्कार कैसे करते हैं..

....

5.14 क्या आपके समाज के लोग देवी देवताओं की पूजा करते हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

हाँ तो किसकी..

....

5.15 किन-किन अवसरों पर देवी देवताओं की पूजा करते हैं :

प्रतिदिन ☐ विशेष अवसरों पर ☐ त्यौहार पर ☐

5.16 देवी देवताओं की पूजा आप किस स्तर पर करते हैं :

व्यक्तिगत ☐ सामूहिक ☐ दोनों रूपों में ☐

5.17 देवी-देवताओं की पूजा के लिए आप क्या करते हैं ....

....

5.18 पूजा स्थल कहाँ होता है :

घर में ☐ विशेष पेड़ पर ☐ अन्य..

5.19 क्या आप पूजा के अवसरों पर बलि भी चढ़ाते हैं :

यदि हाँ तो किन अवसरों पर ....

....

5.20 क्या आप किसी मृत्क आत्माओं की भी पूजा करते हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

5.00 उत्सव, रीतियाँ व परम्परायें :

6.01 आप परम्परागत रूप में किन-किन उत्सवों को मनाते हैं :

होली ☐ दशहरा ☐ दीवाली ☐ तीज ☐ राखी ☐

जन्माष्टमी ☐ शिवरात्रि ☐ अन्य..

....

6.02 आपके समाज में किन उत्सवों को मनाया जाता है ....

....

6.03 आपके मनोरंजन के साधन कौन-कौन से हैं :

....

....

6.05 क्या आपका कोई टोटम भी है : हाँ ☐ नहीं ☐

यदि हाँ तो उनका विवरण दें ....

....

6.06 क्या आप किन्हीं टेबू (निषेधों) का पालन भी करते हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

यदि हाँ तो उनका विवरण दें ....

....

6.07 क्या आपके समाज में जादू टोने का प्रचलन है : हाँ ☐ नहीं ☐

यदि हाँ तो किस तरह का..

....

6.08 क्या आप बीमार पड़ने पर व्यक्ति को जादू टोने द्वारा ठीक कराते हैं? या डाक्टर को दिखाते हैं..

....

6.09 क्या सभ्य समाज के सम्पर्क में आने से आपका जादू टोने से विश्वास हटता जा रहा है :

हाँ ☐ नहीं ☐

7.00 भाषा :

7.01 आप मुख्यतः किस भाषा का प्रयोग करते हैं :

शौका बोली ☐ हिन्दी ☐ नेपाली ☐ मिलीजुली ☐

7.02 क्या आप काम को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए अपनी भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषा का भी प्रयोग करते हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

यदि हाँ तो किन-किन का..

....

8.00 वेशभूषा :

8.01 आपके समाज में स्त्रियों व पुरुषों की वेशभूषा क्या है :

स्त्री -..

पुरुष- ....

8.02 शादी विवाह के अवसर पर आपके यहाँ स्त्रियाँ निम्न में से किन आभूषणों का प्रयोग करती हैं :

सोना ☐ चाँदी ☐ सोना-चाँदी ☐ अन्य..

....

8.03 क्या सभ्य समाज के सम्पर्क में आने पर आपकी वेशभूषा व पहनावे में कोई परिवर्तन आया है-

हाँ ☐ नहीं ☐

यदि हाँ तो क्या..

9.00 स्त्रियों की स्थिति :

9.01 आपके समाज में किस पक्ष को अधिक प्रभावशाली माना जाता है :

स्त्री पक्ष ☐ पुरुष पक्ष ☐

9.02 आपके समाज में स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हैं या नहीं :

....

....

10.00 आर्थिक संरचना एवं व्यापार :

10.01 आपकी आय का स्वरूप क्या है?

वस्तु ☐ नकद ☐ नकद एवं वस्तु ☐

10.02 क्या आप अपनी आय में से बचत कर पाते हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

10.03 आप अपनी बचत का क्या करते हैं :

सम्पत्ति जोड़ते हैं ☐ कर्ज उतारने में ☐ ऋण देते हैं ☐

व्यवसाय में लगाते हैं ☐ बैंक में जमा करते हैं। ☐

10.04 क्या आप ऋण ग्रस्त हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

10.05 आप ऋण कहां से प्राप्त करते हैं :

महाजन से ☐ बैंक से ☐ रिश्तेदारों से ☐ अन्य..................

....

10.06 आपकी ऋण ग्रस्तता के क्या कारण हैं :

धार्मिक संस्कारों के खर्च ☐ शिक्षा ☐ बीमारी ☐ अन्य..................................

....

10.07 क्या आपके व्यवसाय में परिवार के सदस्यों का सहयोग प्राप्त होता है : हाँ ☐ नहीं ☐

यदि हाँ तो किस रूप में ....

10.08 नेपाल-तिब्बत व्यापार में आप कौन-कौन सी वस्तुएँ ले जाते हैं :

खाद्य ☐ वस्त्र ☐ अन्य..

....

10.09 तिब्बत से क्या लेकर आते हैं :

भेड ☐ ऊन ☐ खाद्य ☐ वस्त्र ☐ अन्य ....

....

10.10 तिब्बत से लायी वस्तुओं को कहाँ बेचते हैं :

....

10.11 शीतकालीन आवास में आपकी व्यावसायिक गतिविधियां क्या होती हैं :

....

10.12 नेपाल-तिब्बत व्यापार की स्थिति आपके पिता के समय से अब कैसी है :

अच्छी ☐ पहले से खराब ☐ जैसी की तैसी ☐

10.13 नेपाल-तिब्बत व्यापार के दौरान आने वाली समस्यायें एवं सुझाव :

....

11.00 व्यय के प्रतिमान :

11.01 वस्तुएं एवं उन पर व्यय

वस्तुएं	अनुमानित व्यय (रुपये में) प्रति वर्ष
खाद्य	
वस्त्र	
घर	
स्वास्थ्य	
मनोरंजन	
मादक पेय	
धूम्रपान	
शिक्षा	
उत्सव	
कानूनी कार्य	
अन्य	
कुल	

12.00 कृषि प्रतिमान :

12.01 कृषि के साधन :

हल-बैल ☐ खोदने वाले यन्त्र ☐ हल बैल एवं खोदने वाले यन्त्र ☐

अन्य..

12.02 उत्तम कृषि उत्पादन के लिए अपनायी जाने वाली पद्धतियां

आधुनिक प्रविधि ☐ उन्नत बीज ☐ रासायनिक खाद ☐

व्यावसायिक फसल ☐ अन्य..

12.03 क्या आप कृषि से अवकाश के समय अन्य कोई अतिरिक्त कार्य करते हैं : हां ☐ नहीं ☐

12.04 किस प्रकार का अतिरिक्त कार्य करते हैं ....

....

13.00 पड़ोसी समुदाय के साथ सहभागिता की स्थिति :

13.01 अन्य जनजाति या समुदाय के साथ सहभागिता की प्रकृति :

सामाजिक ☐ आर्थिक ☐ राजनैतिक ☐ उत्सव ☐ विधि सम्बन्धी ☐

अन्य..

13.03 अजनजाति समाज से सहभागिता की प्रकृति :

सामाजिक ☐ आर्थिक ☐ राजनैतिक ☐ उत्सव ☐ विधि सम्बन्धी ☐

अन्य..........

13.04 क्या आप निम्न में अपना मत देते हैं :

ग्राम पंचायत चुनाव ☐ संसद के चुनाव ☐ कहीं नहीं ☐

13.05 यदि नहीं तो क्यों ....

13.06 अन्य जनजाति समुदाय की सहभागिता की स्थिति :

सामाजिक ☐ आर्थिक ☐ राजनैतिक ☐ उत्सव ☐ विधि सम्बन्धी ☐

अन्य..........

13.07 अजनजाति समुदाय की सहभागिता की स्थिति :

सामाजिक ☐ आर्थिक ☐ राजनैतिक ☐ उत्सव ☐ विधि सम्बन्धी ☐

अन्य..........

13.08 सवर्ण हिन्दू जाति से कच्चा अन्न स्वीकार करते हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

यदि नहीं क्यों ....

13.09 सवर्ण हिन्दू जाति से पक्का अन्न स्वीकार करते हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

13.10 क्या अछूत हिन्दू जाति से कच्चा अन्न स्वीकार करते हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

यदि नहीं तो क्यों..........

13.11 अछूत हिन्दू जाति से पक्का अन्न स्वीकार करते हैं : हाँ ☐ नहीं ☐

यदि नहीं तो क्यों ....

13.12 पानी किससे स्वीकार करते हैं :

सवर्ण हिन्दु जाति ☐ अछूत जाति ☐

13.13 कच्चे अन्न का विनिमय किसके साथ करते हैं :

सवर्ण हिन्दु जाति ☐ अछूत जाति ☐

13.14 पक्का अन्न का विनिमय किसके साथ करते हैं :

सवर्ण हिन्दु जाति ☐ अछूत जाति ☐

13.15 जल का विनिमय किसके साथ करते हैं :

सवर्ण हिन्दु जाति ☐ अछूत जाति ☐

13.16 अन्य पड़ोसी समुदाय के पारम्परिक उत्सव में सहभागिता होती है : हाँ ☐ नहीं ☐

13.17 अन्य समुदाय के साथ सेवाओं के लेन देन की स्थिति :

सामाजिक ☐ आर्थिक ☐ विधिक ☐

अन्य..........

कोई नहीं ☐